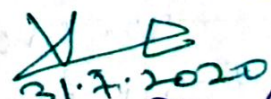


31.7.2020

अभिलेख उपलब्ध किमा गया। उक्त पक्षों को सुना, राजस्व आगजाते और हल्का कर्मचारी एवं अंचल निरीक्षक के प्रतिवेदन का ध्यान रखते हुए स्पष्ट है कि आवेदिका डेगनी देवी पति राजकुमार पासवान साकिन पाण्डु बाना जयनगर ने दिनांक 02.4.96 में भौ. अ. 011 पति पाचु पासवान से भौ. अ. पाण्डु खाता सं. 02 प्लॉट सं. 384 रकबा 04 डी. भूमि खरीदा जिसकी जमाबंदी पंजी II के पेज सं. 83/2 पर आवेदिका के नाम से दर्ज है। दूसरा केवल दिनांक 23.10.2002 को भौ. अ. 011 पति स्व. पाचु पासवान सा. पाण्डु से खाता सं. 02 प्लॉट सं. 384 रकबा 06 डी. भूमि अंजू देवी पति उपेन्द्र पासवान, डेगनी देवी पति राजकुमार पासवान ने खरीदा जिसका जमाबंदी पंजी II के पेज सं. 82/2 पर दर्ज है। उसी प्लॉट में भौ. अ. 011 पति स्व. पाचु राम सा. पाण्डु ने खाता सं. 02 प्लॉट सं. 384 रकबा 02 डी. केवल सं. 4813/04.08.2009 के द्वारा बंशीधर यादव पिता तेजो महतो को विक्रय किया है जिसका जमाबंदी पंजी II के पृष्ठ सं. 152/2 पर दर्ज है। हल्का कर्मचारी के प्रतिवेदन के अनुसार वर्तमान में उक्त प्लॉट खाली पड़ा हुआ है और किसी व्यक्ति द्वारा कोई भी कार्य नहीं किया गया है। प्रथम पक्ष राजकुमार पासवान का कथना है कि उसके 10 डी. भूमि में बंशीधर यादव के पुत्रों द्वारा लकड़ी इलादि रखकर जोतने नहीं दिया जाता है जबकि द्वितीय पक्ष नन्दलाल यादव पिता बंशीधर यादव सा. पाण्डु का कथना है कि

वह अपने 02 डी. बी भूमि पर ही काबिज है।
 उसे प्रथम पक्ष की भूमि से कोई मतलब नहीं है।
 द्वितीय पक्ष प्रसादी सिंह पिता वासुदेव सिंह अग्रन
 सिंह वास्तु मुंजी सिंह का कहना है कि मो. अक़ाणा
 चैत्रि पाचू पासवान ने 06 डी. भूमि खरीदी किता है
 जबकि उसके पति पाचू पासवान का हिस्सा 04 डी
 होता है। और 04 डी. भूमि की प्रथम पक्ष की
 खरीदी गलत है। यद्यपि इस खरीदी एवं उसके
 कारिज खारिज के विरुद्ध द्वितीय पक्ष ने किसी
 न्यायालय में वाद दावा नहीं किया है। अब
 अन्न पक्षकार त्रिभुवन यादव के पिता शिवलाल
 मदन के कहना है कि मसो. कमी ने खरीदगी
 से प्राप्त मौजा पांडु खाता सं. 02 लॉट सं. 384
 एवम् 08 डी. भूमि में से 1 1/2 डी. भूमि त्रिभुवन यादव
 एवं रघुनाथ यादव पिता शिवलाल मदन के विरुद्ध
 किया है जिसपर वो काबिज है। प्रथम पक्ष
 डोगरी देवी पति राजकुमार पासवान ने उक्त भूमि
 से संबंधित ग्रामीण पंचायत की कायापत्ती
 बसलन किया है जिसमें अन्नगर भूमि के
 सीमांकन द्वारा मामला सुलझाने की बात बुझी
 गयी है। अन्न पक्षों को असुनने से यह स्पष्ट
 है कि इनकी भूमि की संपत्ति से विवाद
 का निपटारा संभव है। अतः अन्न पक्षों को
 अपनी भूमि का सीमांकन कराने का निर्देश
 दिया जाता है इसी के साथ वाद की हरिवाई
 समाप्त की जाती है।


 31.7.2020
 अंचल अधिकारी
 जयनगर